## न्याय के विविध आयाम

डेविड ह्यूम "न्याय अर्थ नियमों का पालन मात्र है।' परंपरागत रूप से न्याय की दो ही धारणाएं प्रचलित हैं :- 1. नैतिक 2. कानूनी

1. नैतिक - न्याय इस अवधारणा पर आधारित है कि संसार में कुछ सर्वव्यापक, अपरिवर्तनीय तथा अंतिम प्राकृतिक नियम है जो कि व्यक्तियों के आपसी संबंधों को ठीक प्रकार से संचालित करते हैं।

2. कानूनी - राज्य के उद्देश्यों में न्याय को बहुत अधिक महत्व दिया गया है। समस्त कानूनी व्यवस्था को न्याय व्यवस्था कहा जाता है। कानूनी न्याय की धारणा को दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है -

1. कानूनों का निर्माण अर्थात सरकार द्वारा बनाए गए कानून न्यायोचित होने चाहिए।
2. कानूनों को लागू करना अर्थात बनाए गए कानूनों को न्यायोचित ढंग से लागू किया जाना चाहिए।

वर्तमान समय में न्याय के राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक आयाम हैं।

3. राजनीतिक आयाम - 1. भेदभाव रहित राजनीतिक व्यवस्था की स्थापना 2. राजनीतिक समानता 3. एक व्यक्ति एक वोट 4. कानून द्वारा शासन 5. संविधान की व्यवस्थाओं की विधिवत रचना 6. स्वतंत्र प्रेस और लोकतांत्रिक अधिकार 7. समय समय पर निष्पक्ष चुनावों की व्यवस्था आदि को शामिल किया गया है।

4. सामाजिक आयाम में न्याय एक न्यायपूर्ण समाज को अभिव्यक्त करता है। जिसमें निम्न गुण

Scanned with CamScanner

होने चाहिए - 1. सभी प्रकार के भेदभाव का अंत 2. जन्म, जाति, वर्ण, मत अथवा लिंग के पर आधारित विशेषाधिकारों का अंत 3. सामर्थ्य पर आधारित सामाजिक श्रमिक 4. रूढ़िगत क्रमबद्धता के स्थान पर सामाजिक गतिशीलता 5. समानता 6. व्यापक भ्रातृभाव।

5. आर्थिक आयाम - यह आर्थिक संरचना के न्यायपूर्ण होने पर बल देता है। समाजवादी, श्रमसंघवादी तथा अराजकतावादी विचारकों ने इसकी ये विशेषतायें बताई हैं- 1] परस्पर सहयोग पर आधारित सामाजिक व्यवस्था की स्थापना 2] स्वेच्छा और स्वतंत्र आर्थिक उद्यमों के माध्यम से अधिकतम संभव उत्पादन की प्राप्ति 3. उत्पादित वस्तुओं का समतापूर्ण वितरण 4. एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्तियों के शोषण का अंत 5. दुर्घटनाओं बीमारी और वृद्धावस्था में व्यापक सामाजिक सुविधाओं का प्रबंध 6. कुछ ही व्यक्तियों तक आर्थिक संसाधनों के केंद्रीकरण पर रोक।

राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक न्याय ये तीनों न्याय एक ही सिद्धांत के प्रयोगक्षेत्र हैं ये तीनों एक दूसरे के पूरक हैं। समग्र अवलोकन के बाद यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक न्याय स्वतंत्रता के आदर्श को प्रमुखता देता है, आर्थिक न्याय समानता के आदर्श को महत्व देता है और सामाजिक न्याय बंधुत्व के आदर्श को साकार करना चाहता है। इन तीनों को मिलाकर ही न्याय के व्यापक आदर्श को प्राप्त किया जा सकता है।

समकालीन चिंतन में सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए प्रक्रियात्मक न्याय तथा तात्विक न्याय पर ध्यान दिया गया है। प्रक्रियात्मक न्याय उदारवाद के साथ जुड़ा हुआ है।

→

Scanned with CamScanner